अध्याय 3

भोजन : संग्रह से उत्पादन तक

नेइनुओ का भोजन

आज नेइनुओ अपना पसंदीदा खाना खा रही थी- चावल, स्क्वॉश, कद्दू, बीन्स और गोश्त। स्क्वॉश, कद्दू और बीन्स उसकी नानी ने अपने घर के पिछवाड़े के छोटे से बगीचे में ही उगाया था। खाते-खाते नेइनुओ को पिछले दिनों अपनी स्कूल की तरफ़ से की गई यात्रा के दौरान मध्य प्रदेश में खाए खाने की याद आ गई। वह कितना मसालेदार था। पर वह ऐसा क्यों था?

विभिन्न प्रकार के भोजन

आज हमें अपने भोजन का अधिकांश हिस्सा उगाई गई फ़सलों और पाले गए पशुओं से मिलता है। भिन्न-भिन्न फ़सलों को उगाने के लिए भिन्न-भिन्न जलवायु की आवश्यकता पड़ती है जैसे धान की खेती के लिए गेहूँ या जौ की तुलना में ज़्यादा पानी की ज़रूरत पड़ती है। इसीलिए हम देखते हैं कि किसान विशेष फ़सल विशेष क्षेत्रों में ही उगाते हैं। यही नहीं पशुओं को भी अपने अनुकूल वातावरण की आवश्यकता होती है। उदाहरण के तौर पर हम देख सकते हैं कि सूखी और पहाड़ी जलवायु में मवेशियों की तुलना में भेड़ या बकरी अधिक सहजतापूर्वक जीवित रह सकते हैं। पर जैसाकि तुमने अध्याय 2 में पढ़ा है, स्त्री-पुरुषों ने अपने भोजन का उत्पादन हमेशा नहीं किया।

खेती और पशुपालन की शुरुआत

अध्याय 2 में हमने पढ़ा है कि दुनिया की जलवायु बदलती रही है। साथ ही लोग जिन वनस्पतियों और पशुओं का भोजन के रूप में इस्तेमाल करते थे, वे भी बदलते रहे। लोगों का ध्यान कुछ बातों की ओर गया जैसे खाने योग्य वनस्पतियाँ कहाँ-कहाँ मिल सकती हैं, बीज कैसे अपनी डंठल से टूट कर गिरते हैं, गिरे बीजों का अंकुरण और उनसे पौधों का निकलना आदि। इसी तरह उन्होंने पौधों की देखभाल करनी शुरू कर दी होगी। चिड़ियों और जानवरों से पौधों की सुरक्षा की होगी, ताकि वे ठीक से बढ़ सकें और उनके बीज पक सकें। इस प्रकार धीरे-धीरे वे *कृषक* बन गए होंगे।

© NCERT not to be republished

इसी तरह लोगों ने अपने घरों के आस-पास चारा रखकर जानवरों को आकर्षित कर उन्हें पालतू बनाया होगा। सबसे पहले जिस जंगली जानवर को पालतू बनाया गया वह कुत्ते का जंगली पूर्वज था। धीरे-धीरे लोग भेड़, बकरी, गाय और सूअर जैसे जानवरों को अपने घरों के नज़दीक आने को उत्साहित करने लगे। ऐसे जानवर झुण्ड में रहते थे और ज़्यादातर घास खाते थे। अक्सर लोग अन्य जंगली जानवरों के आक्रमण से इनकी सुरक्षा किया करते थे और इस तरह धीरे-धीरे वे *पशुपालक* बन गए होंगे।

क्या तुम बता सकती हो कि सबसे पहले कुत्तों को ही पालतू क्यों बनाया गया?

बसने की प्रक्रिया

लोगों द्वारा पौधे उगाने और जानवरों की देखभाल करने को 'बसने की प्रक्रिया' का नाम दिया गया है। अपनाए गए ये पौधे तथा जानवर अक्सर जंगली पौधों तथा जानवरों से भिन्न होते हैं। इसकी वजह यह है कि बसने की प्रक्रिया की दिशा में अपनाए गए पौधों या जानवरों का लोग चयन करते हैं। उदाहरण के तौर पर लोग उन्हीं पौधों तथा जानवरों का चयन करते हैं जिनके बीमार होने की संभावना कम हो। यही नहीं, लोग उन्हीं पौधों को चुनते हैं जिनसे बड़े दाने वाले अनाज पैदा होते हैं; साथ ही जिनकी मज़बूत डंठले अनाज के पके दानों के भार को संभाल सकें। ऐसे पौधों के बीजों को संभालकर रखा जाता है ताकि फिर से उगाने के लिए उनके गुण सुरक्षित रह सकें।

उन्हीं जानवरों को आगे प्रजनन के लिए चुना जाता है, जो आमतौर पर अहिंसक होते हैं। इसलिए हम देखते हैं कि पाले गए जानवर तथा कृषि के लिए अपनाए गए पौधे, जंगली जानवरों तथा पौधों से धीरे-धीरे भिन्न होते गए। मिसाल के तौर पर जंगली जानवरों की तुलना में पालतू जानवरों के दाँत और सींग छोटे होते हैं।

इन दाँतों को देखो। इनमें से कौन-सा जंगली सूअर का है और कौन-सा पालतू सूअर का?

बसने की प्रक्रिया पूरी दुनिया में धीरे-धीरे चलती रही। यह करीब 12,000 साल पहले शुरू हुई। वास्तव में आज हम जो भोजन करते हैं वो इसी बसने की प्रक्रिया की वजह से है। कृषि के लिए अपनाई गई सबसे प्राचीन फ़सलों में गेहूँ तथा जौ आते हैं, उसी तरह सबसे पहले पालतू बनाए गए जानवरों में कुत्ते के बाद भेड़-बकरी आते हैं।

एक नवीन जीवन-शैली

अनाज के उपयोग

तुम किसी पौधे के बीज को बो कर देखो, तुम पाओगी कि इसे विकसित होने में कुछ वक्त लगता है। इसमें कुछ दिन, महीने या फिर साल तक लग सकता है। इसलिए जब लोग पौधे उगाने लगे तो उनकी देखभाल के लिए उन्हें एक ही जगह पर लंबे समय तक रहना पड़ा था। बीज बोने से लेकर फ़सलों के पकने तक, पौधों की सिंचाई करने, खरपतवार हटाने, जानवरों और चिड़ियों से उनकी सुरक्षा करने जैसे बहुत-से काम शामिल थे। कटाई के बाद, अनाज का उपयोग बहुत संभाल कर करना पड़ता था।

अनाज को भोजन और बीज, दोनों ही रूपों में बचा कर रखना आवश्यक था, इसलिए लोगों को इसके भंडारण की बात सोचनी पड़ी। बहुत-से इलाकों में लोगों ने मिट्टी के बड़े-बड़े बर्तन बनाए, टोकरियाँ बुनीं या फिर ज़मीन में गड्ढा खोदा। क्या तुम्हें लगता है कि शिकारी या भोजन-संग्रह करने वाले बर्तन बनाते और उनका प्रयोग करते होंगे? अपने जवाब का कारण बताओ।

जानवर : चलते-फिरते 'खाद्य-भंडार'

जानवर बच्चे देते हैं जिससे उनकी संख्या बढ़ती है। अगर जानवरों की देखभाल की जाए तो उनकी संख्या तो बढ़ती ही है साथ ही उनसे दूध भी प्राप्त हो सकता है जो भोजन का एक अच्छा स्रोत है। यही नहीं जानवरों से हमें मांस भी मिलता है। दूसरे शब्दों में, पशु-पालन भोजन के 'भंडारण' का एक तरीका है।

भोजन के अतिरिक्त जानवरों से और क्या-क्या मिल सकता है?

आज जानवरों का उपयोग किस लिए होता है?

आओ, आरंभिक कृषकों और पशुपालकों के बारे में पता करें?

मानचित्र 2 (पृष्ठ संख्या 14) देखो। क्या तुम्हें कई नीले वर्ग दिख रहे हैं? पता है, इनमें से प्रत्येक बिंदु उस जगह को दर्शाता है, जहाँ पुरातत्त्वविदों को

© NCERT not to be republished

शुरुआती कृषकों और पशुपालकों के होने के साक्ष्य मिले हैं। ये पूरे उपमहाद्वीप में पाए गए हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण पश्चिमोत्तर क्षेत्र में, आधुनिक कश्मीर में, और पूर्वी तथा दक्षिण भारत में पाए गए हैं।

वास्तव में ये निर्दिष्ट स्थान कृषकों और पशुपालकों की बस्तियाँ थीं या नहीं, इसे जाँचने के लिए वैज्ञानिक खुदाई में मिले पौधों और पशुओं की हड्डियों के नमूनों का अध्ययन करते हैं। इनमें से सबसे रोचक जले हुए अनाज के दानों के अवशेष हैं। ऐसा लगता है कि ये गलती से या फिर जानबूझ कर जलाए गए होंगे। वैज्ञानिक इन अनाज के दानों की पहचान कर सकते हैं। इस तरह हमें पता चलता है कि इस उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में बहुत सारी फ़सलें उगाई जाती रही होंगी। वैज्ञानिक विभिन्न जानवरों की हड्डियों की भी पहचान कर सकते हैं।

नीचे की तालिका से तुम यह जान सकती हो कि कहाँ-कहाँ अनाजों और पालतू जानवरों की हड्डियों के अवशेष मिले हैं।

अनाज और हड्डियाँ	पुरास्थल
गेहूँ, जौ, भेड़, बकरी, मवेशी	मेहरगढ़ (आधुनिक पाकिस्तान)
चावल, जानवरों की हड्डियों के टुकड़े	कोल्डिहवा (आधुनिक उत्तर प्रदेश)
चावल, मवेशी (मिट्टी पर खुरों के निशान)	महागढ़ा (आधुनिक उत्तर प्रदेश)
गेहूँ और दलहन	गुफ़क्राल (आधुनिक कश्मीर)
गेहूँ और दलहन, कुत्ते, मवेशी, भैंस, भेड़, बकरी	बुर्ज़होम (आधुनिक कश्मीर)
गेहूँ, हरे चने, जौ, भैंस, बैल	चिराँद (आधुनिक बिहार)
ज्वार-बाजरा, मवेशी, भेड़, बकरी, सूअर	हल्लूर (आधुनिक आंध्रप्रदेश)
काला चना, ज्वार-बाजरा, मवेशी, भेड़, सूअर	पैय्यमपल्ली (आधुनिक आंध्रप्रदेश)
जिन जगहों पर अनाज तथा हड्डियों के अवशेष मिले हैं, ये उनमें से सिर्फ कुछ ही हैं।	

© NCERT not to be republished

स्थायी जीवन की ओर

पुरातत्त्वविदों को कुछ पुरास्थलों पर झोपड़ियों और घरों के निशान मिले हैं। जैसे कि बुर्ज़होम (वर्तमान कश्मीर में) के लोग गड्ढे के नीचे घर बनाते थे जिन्हे गर्तवास कहा जाता है। इनमें उतरने के लिए सीढ़ियाँ होती थीं। इससे उन्हें ठंढ के मौसम में सुरक्षा मिलती होगी। पुरातत्त्वविदों को झोपड़ियों के अंदर और बाहर दोनों ही स्थानों पर आग जलाने की जगहें मिली हैं। ऐसा लगता है कि लोग मौसम के अनुसार घर के अंदर या बाहर खाना पकाते होंगे।

एक गर्तवास का चित्र बनाओ।

बहुत सारी जगहों से पत्थर के औज़ार भी मिले हैं। इनमें से कई ऐसे हैं, जो पुरापाषाणयुगीन उपकरणों से भिन्न हैं। इसीलिए इन्हें *नवपाषाण युग* का माना गया है। इनमें वे औज़ार भी हैं, जिनकी धार को और अधिक पैना करने के लिए उन पर पॉलिश चढ़ाई जाती थी। ओखली और मूसल का प्रयोग अनाज तथा वनस्पतियों से प्राप्त अन्य चीज़ों को पीसने के लिए किया जाता था। आज हज़ारों साल बाद भी ओखली और मूसल का प्रयोग अनाज पीसने के लिए किया जाता है। उसी तरह प्राचीन प्रस्तरयुगीन औज़ारों का निर्माण और प्रयोग लगातार होता रहा। कुछ औज़ार हड्डियों से भी बनाए जाते थे।

नवपाषाण युग के कुछ उपकरण।

इनकी तुलना पृष्ठ 13 (अध्याय 2) पर दिखाए गए उपकरणों से करो। तुम्हें इनमें क्या-क्या समानताएँ और भेद दिखाई देते हैं?

नवपाषाण युग के पुरास्थलों से कई प्रकार के मिट्टी के *बर्तन* मिले हैं। कभी-कभी इन पर अलंकरण भी किया जाता था। बर्तनों का उपयोग चीज़ों

2018-19

को रखने के लिए किया जाता था। धीरे-धीरे लोग बर्तनों का प्रयोग खाना बनाने के लिए भी करने लगे। चावल, गेहूँ तथा दलहन जैसे अनाज अब आहार का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए थे। इसके साथ-साथ अब लोग कपड़े भी बुनने लगे थे। इसके लिए कपास जैसे आवश्यक पौधे उगाए जा सकते थे।

क्या तुम कल्पना कर सकती हो कि इस पात्र में क्या रखा होगा?

क्या ये परिवर्तन हर जगह एक साथ ही आ गए होंगे? ऐसी बात नहीं है। एक तरफ़ जहाँ कई जगहों पर स्त्री-पुरुष शिकार और भोजन-संग्रह करने का काम करते रहे थे वहीं अन्य लोगों ने हज़ारों सालों के दरम्यान धीरे-धीरे खेती और पशुपालन को अपना लिया। बहुत जगह लोग मौसम के मुताबिक बदल-बदल कर अपनी जीविका चलाया करते थे।

अन्य रीति-रिवाज

पुरातत्त्वविद् बहुत स्पष्ट रूप से इस बारे में कुछ नहीं कह सकते। विद्वानों ने ऐसे किसानों का अध्ययन किया है। इनमें प्रायः कृषक और पशुपालक समूह में रहते हैं जिन्हें *जनजाति* कहते हैं। विद्वानों ने पाया है कि ये लोग कुछ ऐसे रीति-रिवाजों को मानते हैं, जो संभवतः पहले से ही प्रचलित रहे हैं।

जनजाति

प्रायः जनजाति के लोग छोटी-छोटी बस्तियों में रहते हैं। ज़्यादातर परिवार एक-दूसरे से संबंधित होते हैं और इस तरह के परिवारों के समूह मिलकर जनजाति का निर्माण करते हैं।

- जनजाति के सदस्य शिकार, भोजन-संग्रह, खेती, पशुपालन और मछली पकड़ने जैसे पेशे अपनाते हैं। अक्सर महिलाएँ खेती का सारा काम करती हैं। इसमें ज़मीन तैयार कर बीज बोने, पौधे की देखभाल करने से लेकर फ़सल काटने तक का काम शामिल है। बच्चे पौधों की देखभाल करते हैं और चिड़ियों और जानवरों को दूर भगाते हैं ताकि वे पौधों और फ़सलों को नुकसान न पहुँचाए। महिलाएँ फ़सल दावकर अनाज कूटती-पीसती हैं। पुरुष आमतौर पर पशुओं के बड़े-बड़े झुण्डों को चराते हैं जबकि बच्चे छोटे झुण्डों को। यहाँ जानवरों की सफ़ाई तथा दूध निकालने का काम स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर करते हैं। उसी तरह दोनों मिलकर बर्तन बनाने, टोकरियाँ बुनने, औज़ार तथा झोपड़ियाँ बनाने का काम भी साथ-साथ करते हैं। गाना, नाच और घरों की सजावट भी उनकी ज़िंदगी का एक अहम हिस्सा है।

© NCERT not to be republished

- कुछ व्यक्तियों को नेता मान लिया जाता है। वे अनुभवी वृद्ध व्यक्ति, नौजवान योद्धा या फिर पुरोहित हो सकते हैं। वयस्क महिलाओं को भी उनके ज्ञान तथा अनुभव के लिए विशिष्ट सम्मान दिया जाता है।
- जनजातियों की सांस्कृतिक-परम्पराएँ बहुत समृद्ध तथा विशिष्ट होती हैं। इनमें उनकी भाषाएँ, संगीत, कहानियाँ तथा चित्रकारी भी शामिल हैं। उनके अपने देवी-देवता होते हैं।
- ज़मीन, जंगल, घास के मैदान तथा पानी पूरे कुनबे की सम्पत्ति मानी जाती है जिनका उपयोग सभी एक साथ करते हैं। इनमें गरीब और अमीर के बीच कोई ख़ास अंतर नहीं होता। इसलिए जनजातीय समाज अन्य समाजों से भिन्न होते हैं। इन अन्य समाजों के बारे में तुम आगे पढ़ोगी।

पुरुषों द्वारा किए जाने वाले कामों की एक सूची बनाओ। महिलाएँ क्या-क्या काम करती हैं? कौन-से ऐसे काम हैं, जो स्त्री-पुरुष दोनों करते हैं?

सूक्ष्म-निरीक्षण

(क) मेहरगढ़ में जीवन-मृत्यु

मानचित्र 2 (पृष्ठ 14) में मेहरगढ़ ढूँढ़ो। यह ईरान जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण रास्ते, बोलन दर्रे के पास एक हराभरा समतल स्थान है। मेहरगढ़ संभवतः वह स्थान है, जहाँ के स्त्री-पुरुषों ने, इस इलाके में सबसे पहले जौ, गेहूँ उगाना और भेड़-बकरी पालना सीखा।

गाँव

गाँवों की यह विशेषता है कि वहाँ रहने वाले अधिकांश लोग भोजन उत्पादन में लगे होते हैं।

यहाँ खुदाई में सबसे पहले के स्तरों से पुरातत्त्वविदों को विभिन्न प्रकार के जानवरों की हड्डियाँ मिलीं। इनमें हिरण तथा सूअर जैसे जंगली जानवरों की हड्डियाँ भी शामिल हैं। उसके बाद के स्तरों से भेड़ और बकरियों की हड्डियाँ ज़्यादा मिली हैं। उसके ऊपर ज़्यादातर मवेशियों की ही हड्डियाँ मिली हैं, इससे ऐसा लगता है कि ये लोग मवेशियों को पालने लगे थे

मेहरगढ़ में इसके अलावा चौकोर तथा आयताकार घरों के अवशेष भी मिले हैं। प्रत्येक घर में चार या उससे ज़्यादा कमरे हैं, जिनमें से कुछ संभवतः भंडारण के काम आते होंगे।

© NCERT not to be republished

पहले और बाद के स्तर

जब पुरातत्त्वविद् किसी जगह की खुदाई करते हैं तो वे कैसे समझते हैं कि कौन-से स्तर पहले के हैं और कौन-से बाद के?

इस चित्र को देखो।

मान लो लोगों ने सबसे पहले समतल भूमि (स्तर 4) पर रहना शुरू किया।

आमतौर पर लोग जहाँ रहते हैं, घर टूटने पर दुबारा वहीं घर बना लेते हैं। टूटे-फूटे सामान और कूड़ा-करकट भी घरों के आस-पास जमा होते रहते हैं। इन कारणों से बस्ती की ज़मीन धीरे-धीरे ऊँची होती रहती है और फिर सैंकड़ों सालों के बाद वहाँ एक टीला बन जाता है। इसलिए जब टीले की खुदाई की जाती है, तो उसका सबसे निचला स्तर सबसे पुराना होता है और उसके बाद के स्तर, बाद के युगों के होते हैं। यही ऊपरी तथा निचली तहें आमतौर पर स्तरों के रूप में जानी जाती हैं।

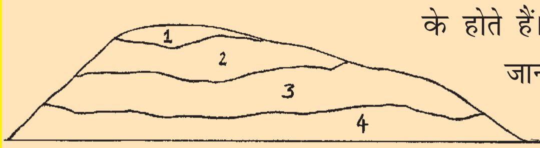

स्तर 2 और 3 को देखो। कौन-सा ज़्यादा पुराना है?

मत्यु के बाद सामान्यतया मृतक के सगे संबंधी उसके प्रति सम्मान जताते हैं। लोगों की आस्था है कि मृत्यु के बाद भी जीवन होता है। इसीलिए *कब्रों* में मृतकों के साथ कुछ सामान भी रखे जाते थे। मेहरगढ़ में ऐसी कई कब्रें मिली हैं। एक कब्र में एक मृतक के साथ एक बकरी को भी दफ़नाया गया था। संभवत: इसे परलोक में मृतक के खाने के लिए रखा गया होगा।

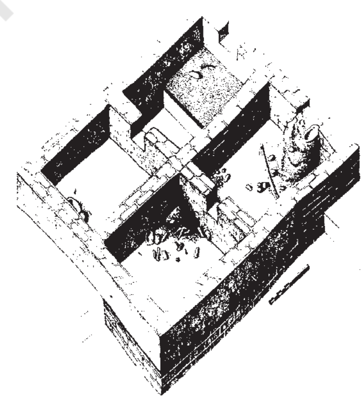

मेहरगढ़ के घर का चित्र।

मेहरगढ़ के घर शायद ऐसे दिखते हों। तुम जिस घर में रहते हो, उसके साथ इस घर की क्या समानता है?

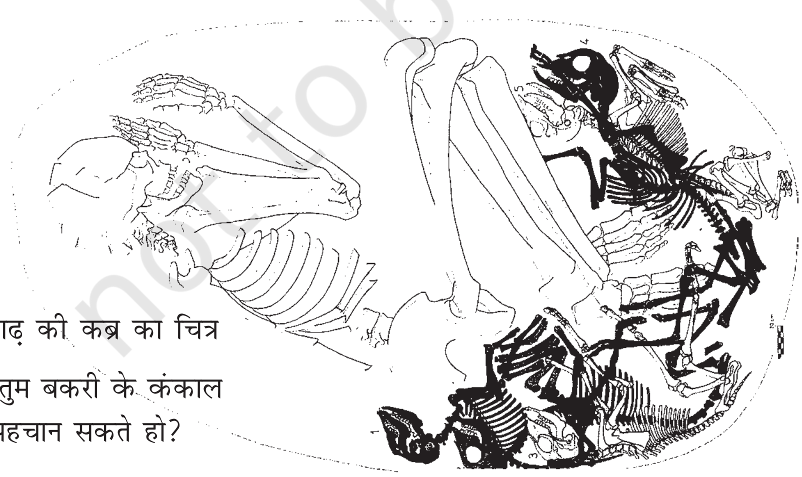

मेहरगढ़ की कब्र का चित्र

क्या तुम बकरी के कंकाल को पहचान सकते हो?

© NCERT not to be republished

(ख) दाओजली हेडिंग

मानचित्र 2 (पृष्ठ 14) में दाओजली हेडिंग ढूँढ़ो। यह पुरास्थल चीन और म्यांमार की ओर जाने वाले रास्ते में ब्रह्मपुत्र की घाटी की एक पहाड़ी पर है। यहाँ खरल और मूसल जैसे पत्थरों के उपकरण मिले हैं। इससे पता चलता है कि यहाँ लोग भोजन के लिए अनाज उगाते थे। साथ ही यहाँ से जेडाइट पत्थर भी मिला है। संभवत: यह पत्थर चीन से आया होगा। इसके अतिरिक्त इस पुरास्थल से काष्ठाश्म (अति प्राचीन लकड़ी, जो सख्त होकर पत्थर बन गई है) के औज़ार और बर्तन भी मिले हैं।

अन्यत्र

एटलस में तुर्की ढूँढ़ो। नवपाषाण युग के सबसे प्रसिद्ध पुरास्थलों में एक चताल ह्यूक तुर्की में है। यहाँ दूर-दराज स्थानों से कई चीज़ें लाई जाती थीं और उनका उपयोग किया जाता था। जैसे सीरिया से लाया गया चकमक पत्थर, लाल सागर की कौड़ियाँ तथा भूमध्य सागर की सीपियाँ। ध्यान रहे कि उस समय तक पहिए वाले वाहन का विकास नहीं हुआ था। लोग सामान खुद या जानवरों की पीठ पर लादकर ले जाया करते थे।

बताओ कौड़ियों तथा सीपियों का क्या उपयोग होता होगा?

कल्पना करो

अगर तुम्हारे पास ज़मीन का एक छोटा-सा टुकड़ा हो तो तुम उसमें कौन-सी फ़सल उगाओगी। बीज कहाँ से मिलेंगे? और तुम उन्हें कैसे बोओगी? अपने पौधों की देखभाल तुम कैसे करोगी? और कैसे यह समझोगी कि अब फ़सल काटने लायक हो गई है?

उपयोगी शब्द

कृषक

पशुपालक

नवपाषाण युग

बर्तन

जनजाति

गाँव

घर

कब्र

© NCERT not to be republished

आओ याद करें

1. खेती करने वाले लोग एक ही स्थान पर लंबे समय तक क्यों रहते थे?
2. पृष्ठ 25 की तालिका को देखो। नेइनुओ अगर चावल खाना चाहती है, तो उसे किन स्थानों पर जाना चाहिए।
3. पुरातत्त्वविद् ऐसा क्यों मानते हैं कि मेहरगढ़ के लोग पहले केवल शिकारी थे, और बाद में उनके लिए पशुपालन ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गया?
4. सही या गलत बताओ।

   (क) हल्लूर में ज्वार-बाजरा मिला है।

   (ख) बुर्ज़होम में लोग आयताकार घरों में रहते थे।

   (ग) चिराँद कश्मीर का एक पुरास्थल है।

   (घ) जेडाइट, जो दाओजली हेडिंग में मिला है, चीन से लाया गया होगा।

आओ चर्चा करें

5. कृषकों-पशुपालकों का जीवन आखेटक-खाद्य संग्राहकों के जीवन से कितना भिन्न था, तीन अंतर बताओ।
6. पृष्ठ 25 की तालिका में दिए गए जानवरों की एक सूची बनाओ और यह भी बताओ कि इनका उपयोग किस रूप में किया जाता था।

आओ करके देखें

7. तुम जिन अनाजों को खाते हो उनकी एक सूची बनाओ।
8. प्रश्न 7 के उत्तर में लिखे अनाजों को क्या तुम स्वयं उगाते हो? अगर हाँ, तो एक तालिका बनाकर उसकी खेती की विभिन्न अवस्थाओं को दिखाओ। अगर नहीं, तो एक तालिका बनाकर दिखाओ कि ये अनाज किसान से लेकर तुम्हारे पास तक कैसे पहुँचे।

कुछ महत्वपूर्ण

तिथियाँ

- बसने की प्रक्रिया का आरंभ (लगभग 12,000 साल पहले)
- मेहरगढ़ में बस्ती का आरंभ (लगभग 8000 साल पहले)

© NCERT not to be republished